बिहारियों की जान है पटना

बिहार की राजधानी पटना है। जी हाँ ! आज पटना के बारे में जानेंगे, मुस्कान केशरी जी से। पटना, बिहारियों के लिए बिल्कुल मुम्बई जैसा हैं। जैसे हर भारतीय के लिए मुम्बई एक अलग उत्साह, जोश व चाहत लाता है ठीक उसी प्रकार बिहारियों के लिए पटना है। मुम्बई जाना कितनों का सपना होता है ठीक उसी प्रकार कई लोगों का पटना जाना भी सपना होता है। इसमें आश्चर्य ना करें, ये जमीनस्तर की बात है। जब आप किसी ग्रामीण क्षेत्र में जाएगे और वहाँ के बच्चे - बच्चियों से बात करेगे तो आपको पता चलेगा कि पटना उनके लिए कितना खास है। ऐसे पटना का पुराना नाम पाटलिपुत्र है। यह नाम मौर्य साम्राज्य के समय से प्रयोग में आया था, जब पाटलिपुत्र मौर्य साम्राज्य की राजधानी थी। ऐसे तो पटना का नाम समय के साथ बदलता गया और यह पाटलिपुत्र से पाटन और फिर पटना हो गया। पाटलिपुत्र नाम का उल्लेख कई प्राचीन ग्रंथों में मिलता है, जैसे मेगस्थनीज की इंडिका पुस्तक में। वैसे भी पटना का इतिहास बहुत पुराना और समृद्धशाली रहा है। पटना प्राचीन काल से ही महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और आर्थिक केंद्र रहा है इसलिए पटना को राजधानी बनाया गया। पटना के कुछ ऐतिहासिक घटनाएँ और युग के बारे में बताते है। सबसे पहले मौर्य युग (322 – 185 ईसा पूर्व), मौर्य युग के समय में ही पाटलिपुत्र नाम प्रयोग में आया था और इस युग में

व्यापारिक और सांस्कृतिक केंद्र था पटना। दूसरा युग गुप्त युग (320 – 550 ईस्वी), इस युग में पटना शिक्षा व संस्कृति का केंद्र बना था। इसलिए गुप्त युग के समय में विश्वविद्यालय व मंदिर का निर्माण किया गया था। तीसरा युग मध्यकालीन युग (1200 – 1750 ईस्वी), इस युग में भी पटना व्यापारिक व सांस्कृतिक केंद्र बना था। इस युग में मस्जिदें व मंदिर का निर्माण किया गया था। चौथा युग ब्रिटिश युग (1750 – 1947 ईस्वी), इस युग में पटना प्रशासनिक व व्यापारिक केंद्र बना था। इस युग में शिक्षा संस्थान व अस्पताल का निर्माण किया गया था। पाँचवा स्वतंत्रता के बाद (1947 ईस्वी से) स्वतंत्रता के बाद बिहार राज्य की राजधानी पटना में, कई विकास परियोजनाएँ शुरु की गई। चलिए अब आप सभी को बताते है कि अगर आप पटना आते है तो आप कहाँ – कहाँ घुमने जाए और अगर आप पटना आ रहे और सब में घूमना चाहते हैं तो कम से कम एक सप्ताह का समय लेकर आए क्योंकि पटना में कई स्थल है जो पर्यटकों को आकर्षित करती हैं। जैसे पटना साहिब गुरुद्वारा, बिहार म्यूजियम, पटना प्लेनेटेरियम, महावीर मंदिर, गोलघर, जापानीज पीस पैगोडा, छोटी दरगाह, संजय गाँधी बोटेनिकल गार्डन, चिडियाघर, बापू टावर व कई पार्क। इसके अलावा पटना में कालदास रंगमंच, बापू सभागार व ज्ञान भवन है। पटना में 62 एकड़ का मैदान है जिसे गाँधी मैदान के नाम से जाना जाता है। गांधी मैदान में विभिन्न समारोह और आयोजन किया जाता है जैसे स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस व अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम। गाँधी मैदान के आसपास कई आकर्षक स्थल है जैसे पटना जंक्शन, पटना साहिब गुरुद्वारा, बिहार विधानसभा।पटना में प्रमुख कला है बिहारी सूफी गायन, जो कि एक पारंपरिक संगीत शैली है जो बिहार में विकसित हुई थी। यह संगीत शैली अपने भक्तिपूर्ण और आध्यामिक गीतों के लिए जानी जाती है, जो अक्सर प्रेम, भक्ति और आध्यामिक अनुभवों पर आधारित होते हैं। इसके अलावा पटना में छऊ नृत्य भी बहुत प्रसिद्ध है जो कि एक पारंपरिक नृत्य शैली है, इस नृत्य के माध्यम से पौराणिक कथाओं और प्राकृतिक दृश्यों पर आधारित होती है। पटना में बच्चों के लिए कई अच्छे विद्यालय व महाविद्यालय का निर्माण किया गया है जैसे ज्ञान निकेतन, पटना विश्वविद्यालय, पटना साइंस कॉलेज, पटना वूमन कॉलेज, पटना कॉलेज, चाणक्य नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी इत्यादि। इसलिए ज्यादातर बच्चे अपनी पढ़ाई के लिए पटना आते हैं। समय के साथ पटना में कई विकास परियोजनाएँ चलाए जा रहे है। पटना सिर्फ राजधानी नहीं, बिहारियों की जान है।

जल गंगा संवर्धन अभियान में सीएमसीएलडीपी के छात्र छात्राओं को दिलाई शपथ

भीकनगांव- जन अभियान परिषद खरगोन जिला समन्वयक विजय शर्मा और ब्लॉक समन्वयक कालू सिंह मंडलोई के निर्देशन पर भीकनगाव में जल गंगा संवर्धन अभियान की सीएमसीएलडीपी के छात्र छात्राओं को जलस्त्रोतों संरक्षण की शपथ दिलाई। इस शपथ में जल का विवेकपूर्ण तरीके से उपयोग करने, जल स्त्रोतों को स्वच्छ बनाए रखने, पानी की हर एक बूंद का संचयन करने, जल शक्ति अभियान केच द रैन को बढ़ावा देने एवं जल को व्यर्थ न बहने देने का संकल्प दिलाया इस दौरान परामर्शदाता अर्पित जायसवाल,भागीरथ मुजाल्दे, मुकेश राठौड़, रीना चौहान नवांकुर अंकित मालीवाल ,सहित सीएमसीएलडीपी के छात्र छात्राएं गोविंद चौहान, दुर्गेश प्रजापत,आदित्य गोयल,अंशुल त्रिपाठी,बरका गारसे,शशि कुशवाह,नीरज जायसवाल,राधेश्याम चौहान,राजाराम डाबर,भगवान सिंह सिसोदिया, बाबूलाल बेस,सावन बिलार्,रवनीत सलूजा,ममता बिल्लौरे,सपना बारे,छाया वर्मा,राखी वर्मा,वैशाली बागवान, साहू बारे,पिंकी भालसे,पायल तपथाप,रजनी दागोड़े,स्वाति चंद्रवाशी विनीत सरमंडल,मनोज सोलंकी,दीपशिखा चौहान,दीपिका बड़गिया,अंजली सोलंकी,पूजा तवर, बरखा गोलकर,रजिता चौहान उपस्थित थे!

पपू गणीवर्य तारकचंद सागर जी मसा एवं साध्वी श्री सुपार्श्वनिधि मसा आदि का हुआ भव्य मंगल प्रवेश

परमात्मा के जयकारों से गूंजा नगर

महिदपुर। जवाहर डोसी पीयूष ।महिदपुर रोड में पपू गणीवर्य तारकचंद सागर जी मसा एवं साध्वी श्री सुपार्श्वनिधिजी मसा आदि ठाणा का रविवार प्रातः 8 बजे नागदा तिराहे से नगर में भव्य मंगल प्रवेश जुलूस ढोल नगाड़ों के साथ प्रारंभ हुआ जहां पर सभी समाजजनों ने पूज्य गुरूदेव व साध्वीजी की मंगल आगवानी की ।मंगल प्रवेश जुलूस नागदा चौराहे से प्रारंभ हुआ।

जगह-जगह समाज जनों द्वारा पूज्य गुरुदेव की गहुली कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया।महिलाएं पुरुष अपने आकर्षण परिवेश में परमात्मा एवं गुरुदेव की जय जयकार लगाते हुए चल रहे थे।मंगल प्रवेश जुलूस नगर के प्रमुख मार्गो का परिभ्रमण करते हुए श्री राजेंद्र सूरी ज्ञान मंदिर पहुंचकर धर्म सभा में परिवर्तित हुआ।पूज्य गणीवर्य तारकचंद सागरजी मसा ने उपस्थित समाज के श्रद्धालुओं को जिनवाणी का रसपान कराते हुए कहा कि नवपद ओली की आराधना के प्रभाव से श्रीपाल मैना सुंदरी का कोढ रोग दूर हो गया था।यह अत्यंत प्रभावशाली नवपद ओली आराधना है। नवकार महामंत्र के नौ पदों के माध्यम से नौ दिनों तक इस नवपद ओली आराधना को करके व्यक्ति अनंत पुण्यों का उपार्जन करता है।जैन समाज के मीडिया प्रभारी सचिन भंडारी ने बताया कि पूज्य साध्वी श्री सुपार्श्वनिधिजी मसा की मंगलकारी निश्रा में श्री नवपद ओली आराधना 4 अप्रैल से 12 अप्रैल तक संपन्न की जाएगी। जैन श्रीसंघ अध्यक्ष अजय चौरडिया ने समाज के सभी श्रावक-श्राविकाओं से अनुरोध किया कि आप सभी पूज्य साध्वीजी की मंगलकारी निश्रा में इस महा मंगलकारी नव पद ओली आराधना में जुड़कर पुण्य लाभ अर्जित कर अपने जीवन को धन्य बनावें।साथ ही 10 अप्रैल को महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव पपू साध्वी जी की पावनकारी निश्रा में धूमधाम से मनाया जाएगा। मंगल प्रवेश जुलूस में सकल जैन श्री संघ,समाज की वरिष्ठ महानुभाव, नवयुवक,महिला,बहु,तरुण बालिका परिषद में उपस्थित होकर धर्मलाभ प्राप्त किया।उक्त जानकारी जैन समाज के मीडिया प्रभारी सचिन भंडारी ने दी।

राजस्थान का प्रमुख लोकोत्सव है गणगौर पर्व

गणगौर एक प्रमुख त्योहार है। यह मुख्य रूप से राजस्थान, हरियाणा, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के ब्रज क्षेत्र में मनाया जाता है। गणगौर दो शब्दों गण और गौर से बना है। इसमें गण का अर्थ भगवान शिव और गौर का अर्थ माता पार्वती से है। इस दिन अविवाहित कन्याएं और विवाहित स्त्रियां भगवान शिव, माता पार्वती की पूजा करती हैं। साथ ही उपवास रखती हैं। कई क्षेत्रों में भगवान शिव को ईसर जी और देवी पार्वती को गौरा माता के रूप में पूजा जाता है। गौरा जी को गवरजा जी के नाम से भी जाना जाता है। धर्मग्रंथों के अनुसार श्रद्धाभाव से इस व्रत का पालन करने से अविवाहित कन्याओं को इच्छित वर की प्राप्ति होती है और विवाहित स्त्रियों के पति को दीर्घायु और आरोग्य की प्राप्ति होती है।

राजस्थानी परम्परा के लोकोत्सव अपने में एक विरासत को संजोए हुए हैं। राजस्थान को देव भूमि कहा जाय तो गलत नहीं होगा। यहां सभी सम्प्रदाय फले फूले हैं। यहाँ के शासकों ने विश्व कल्याण की भवना से अभिभूत होकर लोक मान्यताओं का सम्मान किया है। इसी कारण यहां सभी देवी देवताओं के उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाये जाते हैं। गणगौर का उत्सव भी ऐसा ही लोकोत्सव है। जिसकी पृष्ठ भूमि पौराणिक है। समय के प्रभाव से उनमें शास्त्राचार के स्थान पर लोकाचार हावी हो गया है। परन्तु भाव भंगिमा में कोई कमी नहीं आई है।

गणगौर भी राजस्थान का ऐसा ही एक प्रमुख लोक पर्व है। लगातार 17 दिनों तक चलने वाला गणगौर का पर्व मूलतः कुंवारी लड़कियों व महिलाओं का त्यौहार है। राजस्थान की महिलाएं चाहे दुनिया के किसी भी कोने में हो गणगौर के पर्व को पूरी उत्साह के साथ मनाती है। विवाहिता एंव कुवारी सभी आयु वर्ग की महिलायें गणगौर की पूजा करती है। होली के दूसरे दिन से सोलह दिनों तक लड़कियां प्रतिदिन प्रातः काल ईसर-गणगौर को पूजती हैं। जिस लड़की की शादी हो जाती है वो शादी के प्रथम वर्ष अपने पीहर जाकर गणगौर की पूजा करती है। इसी कारण इसे सुहागपर्व भी कहा जाता है।

राजस्थान की राजधानी जयपुर में गणगौर उत्सव दो दिन तक धूमधाम से मनाया जाता है। सरकारी कार्यालयों में आधे दिन का अवकाश रहता है। ईसर और गणगौर की प्रतिमाओं की शोभायात्रा राजमहल से निकलती है। इनको देखने बड़ी संख्या में देशी-विदेशी सैनानी उमड़ते हैं। सभी उत्साह से भाग लेते हैं। इस उत्सव पर एकत्रित भीड़ जिस श्रृद्धा एवं भक्ति के साथ धार्मिक अनुशासन में बंधी गणगौर की जय-जयकार करती हुई भारत की सांस्कृतिक परम्परा का निर्वाह करती है उसे देख कर अन्य धर्मावलम्बी भी इस संस्कृति के प्रति श्रृद्धा भाव से ओतप्रोत हो जाते हैं। ढूंढाड़ की भांति ही मेवाड़, हाड़ौती, शेखावाटी सहित इस मरुधर प्रदेश के विशाल नगरों में ही नहीं बल्कि गांव-गांव में गणगौर पर्व मनाया जाता है एवं ईसर-गणगौर के गीतों से हर घर गुंजायमान रहता है।

कहा जाता है कि चैत्र शुक्ला तृतीया को राजा हिमाचल की पुत्री गौरी का विवाह शंकर भगवान के साथ हुआ था। उसी की याद में यह त्यौहार मनाया जाता है। गणगौर व्रत गौरी तृतीया चैत्र शुक्ल तृतीया तिथि को किया जाता है। इस व्रत का राजस्थान में बड़ा महत्व है। कहते हैं इसी व्रत के दिन देवी पार्वती ने अपनी उंगली से रक्त निकालकर

महिलाओं को सुहाग बांटा था। इसलिए महिलाएं इस दिन गणगौर की पूजा करती हैं। कामदेव मदन की पत्नी रति ने भगवान शंकर की तपस्या कर उन्हें प्रसन्न कर लिया तथा उन्हीं के तीसरे नेत्र से भष्म हुए अपने पति को पुनः जीवन देने की प्रार्थना की। रति की प्रार्थना से प्रसन्न हो भगवान शिव ने कामदेव को पुनः जीवित कर दिया तथा विष्णुलोक जाने का वरदान दिया। उसी की स्मृति में प्रतिवर्ष गणगौर का उत्सव मनाया जाता है। गणगौर पर्व पर विवाह के समस्त नेगचार व रस्में की जाती है।

होलिका दहन के दूसरे दिन गणगौर पूजने वाली लड़कियां होली दहन की राख लाकर उसके आठ पिण्ड बनाती हैं एवं आठ पिण्ड गोबर के बनाती हैं। उन्हें दूब पर रखकर प्रतिदिन पूजा करती हुई दीवार पर एक काजल व एक रोली की टिकी लगाती हैं। शीतलाष्टमी तक इन पिण्डों को पूजा जाता है। फिर मिट्टी से ईसर गणगौर की मूर्तियां बनाकर उन्हें पूजती हैं। लड़कियां प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में गणगौर पूजते हुये गीत गाती हैं–

गौर ये गणगोर माता खोल किवाड़ी, छोरी खड़ी है तन पूजण वाली।

गीत गाने के बाद लड़कियां गणगौर की कहानी सुनती है। दोपहर को गणगौर के भोग लगाया जाता है तथा कुए से लाकर पानी पिलाया जाता है। लड़कियां कुए से ताजा पानी लेकर गीत गाती हुई आती हैं–

म्हारी गौर तिसाई ओ राज घाट्यारी मुकुट करो,
बीरमदासजी रो ईसर ओराज, घाटी री मुकुट करो,
म्हारी गौरल न थोड़ो पानी पावो जी राज घाटीरी मुकुट करो।

लड़कियां गीतों में गणगौर के प्यासी होने पर काफी चिन्तित लगती है एवं गणगौर को जल्दी से पानी पिलाना चाहती है। पानी पिलाने के बाद गणगौर को गेहूं चने से बनी घूघरी का प्रसाद लगाकर सबको बांटा जाता है और लड़कियां गीत गाती हैं–

म्हारा बाबाजी के माण्डी गणगौर, दादसरा जी के माण्ड्यो रंगरो झूमकड़ो,
ल्यायोजी - ल्यायो ननद बाई का बीर, ल्यायो हजारी ढोला झुमकड़ो।

रात को गणगौर की आरती की जाती है तथा लड़कियां नाचती हुई गाती हैं। गणगौर पूजन के मध्य आने वाले एक रविवार को लड़कियां उपवास करती हैं। प्रतिदिन शाम को क्रमवार हर लडकी के घर गणगौर ले जायी जाती है। जहां गणगौर का ''बिन्दौरा'' निकाला जाता है तथा घर के पुरुष लड़कियों को भेंट देते हैं। लड़कियां खुशी से झूमती हुई गाती हैं–

ईसरजी तो पेंचो बांध गोराबाई पेच संवार ओ राज म्हे ईसर थारी सालीछां।

गणगौर विसर्जन के पहले दिन गणगौर का सिंजारा किया जाता है। लड़कियां मेहन्दी रचाती हैं। नये कपड़े पहनती हैं, घर में पकवान बनाये जाते हैं। सत्रहवें दिन लड़कियां नदी, तालाब, कुए, बावड़ी में ईसर गणगौर को विसर्जित कर विदाई देती हुई दुःखी हो गाती हैं–

गोरल ये तू आवड़ देख बावड़ देख तन बाई रोवा याद कर।

गणगौर की विदाई का बाद कई महिनो तक त्यौहार नहीं आते इसलिए कहा गया है-''तीज त्यौहारा बावड़ी ले डूबी गणगौर''। अर्थात् जो त्यौहार तीज (श्रावणमास) से प्रारम्भ होते हैं उन्हें गणगौर ले जाती है। ईसर-गणगौर को शिव पार्वती का रूप मानकर ही बालाऐं उनका पूजन करती हैं। गणगौर के बाद बसन्त ऋतु की विदाई व ग्रीष्म ऋतु की शुरुआत होती है। दूर प्रान्तों में रहने वाले युवक गणगौर के पर्व पर अपनी नव विवाहित प्रियतमा से मिलने अवश्य आते हैं। जिस गोरी का साजन इस त्यौहार पर भी घर नहीं आता वो सजनी नाराजगी से अपनी सास को उलाहना देती है। ''सासू भलरक जायो ये निकल गई गणगौर, मोल्यो मोड़ों आयो रे''।

गणगौर महिलाओं का त्योहार माना जाता है इसलिए गणगौर पर चढ़ाया हुआ प्रसाद पुरुषों को नहीं दिया जाता है। गणगौर के पूजन में प्रावधान है कि जो सिंदूर माता पार्वती को चढ़ाया जाता है महिलाएं उसे अपनी मांग में सजाती हैं। शाम को शुभ मुहूर्त में गणगौर को पानी पिलाकर किसी पवित्र सरोवर या कुंड आदि में इनका विसर्जन किया जाता है।

आज आवश्यकता है इस लोकोत्सव को अच्छे वातावरण में मनाये। हमारी प्राचीन परम्परा को अक्षुण बनाये रखे। इसका दायित्व है उन सभी सांस्कृतिक परम्परा के प्रेमियों पर है जिनका इससे लगाव है। जो ऐसे पर्वो को सिर्फ पर्यटक व्यवसाय की दृष्टि से न देखकर भारत के सांस्कृतिक विकास की दृष्टि से देखने के हिमायती हैं।अब राजस्थान पर्यटन विभाग की वजह से हर साल मनाए जाने वाले इस गणगौर उत्सव में शामिल होने कई देशी-विदेशी पर्यटक भी पहुँचने लगे हैं।

रमेश सर्राफ धमोरा
(लेखक राजस्थान सरकार से मान्यता प्राप्त स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

देवी के नौ स्वरूपों में समाया है जीवन चक्र और निरामय की संकल्पना

त्योहार हमारे जीवन से सीधे-सीधे जुड़े हैं और प्राचीन परम्पराओं में ईश्वर की आराधना को प्रतीकों और संप्रतीकों से जोड़कर कथाएँ, पुराएँ, आराधनाएँ, परिधान, श्रृंगार, प्रकृति आदि को अभिव्यक्त किया जाता रहा है। इसलिए हमारे देश में हर तिथि कहीं न कहीं एक त्यौहार के रूप में मनाई जाती है। एकम, दूज, तीज.....एकादशी से लेकर पूर्णिमा और अमावस्या को भी त्यौहार में निरूपित किया गया है। जीवन का हर दिन उत्सव है यही हमारी संस्कृति कहती है। शिव, गणेश, लक्ष्मी, पार्वती, राम, हनुमान, दुर्गा, कृष्ण, राधा, कुबेर, चंद्रमा, सूर्य, विष्णु, वराह, भैरव आदि-आदि शक्ति, ऊर्जा, ध्यान, वात्सल्य, वीरता, सद्भावना, करुणा के प्रतीकों की पूजा-आराधना भिन्न-भिन्न स्वरूप में की जाती है। हर त्योहार अपने में लाता है उल्लास के साथ अपने गूढ़ रहस्य जो जीवन को नया आयाम देते हैं। यही विभिन्न रसों की विविधता हमें बार-बार जीवंतता की ओर धकेलती है और जीवन की एक जैसी शैली को विभक्त कर मन को सरोबोर कर देती है। जैसे जीवन में हर अंक का महत्व है वैसे ही नौ का अंक भी हमारी संस्कृति में सीधे-सीधे शक्ति से जुड़ा है। दुर्गा के नौ स्वरूपों की व्याख्या प्रकृति के साथ मानव जीवन के अस्तित्व से भी जुड़ी है।

मानव जीवन को प्रतीकात्मक रूप से नौ हिस्सों में बाँटा गया है और उसके साथ नौ वृक्ष जो मानव शरीर को नवरूप प्रदान करते हैं, से जोड़ा गया है। इसी में नवरात्रि का संकल्प निहित है कि यह नौ दिन जीवन की कायाकल्प के लिए हैं और जीवन की नश्वरता की ओर भी संकेत है। एक स्वप्न की भाँति जीवन चलता है और उसकी सार्थकता तभी है जब हम इस सृष्टि को और बेहतर बनाए। जीवन में शक्ति को नौ दुर्गा के रूप में अभिव्यक्त किया गया है। शरीर की रक्षा के लिए भी कोई कवच चाहिये होता है ताकि रोग, व्याधि से दूर रहकर जीवन को संतुलित किया जा सके। नौ स्वरूपों में नौ औषधियों को समाहित किया गया है जो जीवन को अमरता की ओर ले जाती है। नवदुर्गा के नौ औषधि स्वरूपों को सर्वप्रथम मार्कण्डेय चिकित्सा पद्धति के रूप में दर्शाया गया और चिकित्सा प्रणाली के इस रहस्य को दुर्गा कवच कहा गया है।

शैलपुत्री - देवी शैलपुत्री को बाल रूप माना गया हैं। जैसे शैलपुत्री अपने पिता 'शैल' यानि पर्वतराज हिमालय के नाम से जानी जाती हैं वैसे ही बाल रूप में बालक भी अपने माता-पिता के नाम से जाने जाते है। देवी का ये रूप नवजात बालिका का प्रतीक है जो निश्छलता, स्निग्धता, ममता, वात्सल्य का प्रतीक होकर जीवन में समाया रहता है। कई प्रकार की समस्याओं में काम आने वाली औषधि हरड़, हिमावती है जो देवी शैलपुत्री का ही एक रूप हैं। यह आयुर्वेद की प्रधान औषधि है, जो सात प्रकार की होती है। इसमें हरीतिका भय को हरने वाली है। पथया - जो हित करने वाली है। कायस्था - जो शरीर को बनाए रखने वाली है। अमृता - अमृत के समान। हेमवती - हिमालय पर होने वाली। चेतकी - चित्त को प्रसन्न करने वाली है। श्रेयसी - कल्याण करने वाली।

ब्रह्मचारिणी - देवी का यह रूप है ब्रह्मचारिणी, बचपन के बाद के काल को ब्रह्मचर्य काल कहलाता है जिसमें शिक्षा लेकर ज्ञान को बढ़ाते हैं।

ज्ञान की प्रतीक ब्रह्मचारिणी हमारी जिज्ञासा, तन्मयता, आज्ञा, कांति, आभा, जागरूकता को दर्शाती है। ब्रह्मचारिणी यानि औषधि ब्राह्मी भी होता है। ब्राह्मी, नवदुर्गा का दूसरा रूप ब्रह्मचारिणी है। यह आयु और स्मरण शक्ति को बढ़ाने वाली मन एवं मस्तिष्क में शक्ति प्रदान करती है तथा रुधिर विकारों का नाश करने वाली और स्वर को मधुर करने वाली है। इसलिए ब्राह्मी को सरस्वती भी कहा जाता है।

चंद्रघंटा- देवी का यह स्वरूप युवा अवस्था का प्रतीक है। देवी के इस रूप की दस भुजाएं दर्शाती हैं कि यही वह समय होता है जब समाज, परिवार, मित्र, नाते-रिश्ते और स्वयं की अपेक्षाएँ रहती है कि सभी के लिए अपना श्रेष्ठ दे सकें। दस भुजाएँ दस गुण को दर्शाती है जैसे शुद्धता, विश्वास, अच्छे कार्य, सामंजस्य, संयम, धैर्य, विनम्रता, ईमानदारी, विवेक, संघर्षशीलता। नवदुर्गा का यह रूप है चंद्रघंटा, इसे चन्दुसूर या चमसूर कहा गया है। यह एक ऐसा पौधा है जो धनिये के समान है। इस पौधे की पत्तियों की सब्जी बनाई जाती है, जो लाभदायक होती है। यह औषधि मोटापा दूर करने में लाभप्रद है, इसलिए इसे चर्महन्ती भी कहते हैं। शक्ति को बढ़ाने वाली, हृदय रोग को ठीक करने वाली चंद्रिका औषधि है।

कुष्मांड- इस रूप में माता के हाथ में एक घड़ा होता है जिसे गर्भ का प्रतीक माना जाता है। यानि माता का ये रूप गर्भवती महिला का प्रतीक है। यह जिम्मेदारी, कर्तव्यनिष्ठा, परोपकार, ममता, आनंद, सामंजस्य का भी प्रतीक है। नवसृजन की यह भावना सारे संसार को आगे बढ़ाती है। औषधी के रूप में कुष्माण्डा यानि कुम्हड़ा. नवदुर्गा का चौथा रूप है। इस औषधि से पेठा मिठाई बनती है। कुम्हड़ा पुष्टिकारक, वीर्यवर्धक व रक्त के विकार को ठीक कर पेट को साफ करने में सहायक है। मानसिक रूप से कमजोर व्यक्ति के लिए यह अमृत समान है। यह शरीर के समस्त दोषों को दूर कर हृदय रोग को ठीक करता है। कुम्हड़ा रक्त पित्त एवं गैस को दूर करता है।

स्कंदमाता - देवी का यह स्वरूप मां बनने के बाद संतति के श्रेष्ठ पालन-पोषण को प्रदर्शित करता है। मां ही संस्कारों को देने वाली होती है और जैसे संस्कार होंगे वैसे ही संतानें अपना जीवन-यापन करती हैं। एक मां जीजाबाई बनकर शिवाजी का निर्माण कर सकती है तो झांसी की रानी बनकर लड़ाई भी लड़ सकती है। यह माँ शिक्षक और संरक्षक होती है। स्कन्द कुमार या कार्तिकेय जिन्हें दक्षिण भारत में मुरुगन कहते हैं, उनकी माता के रूप में स्कंदमाता की आराधना होती है और इनकी गोद में स्कन्द कुमार होते हैं। यह माँ की ही शिक्षा थी कि उन्हें तारकासुर वध के लिए तैयार करती है। अगली पीढ़ी के निर्माण एक माँ की अहम भूमिका होती है। यह वीरता, साहस, अक्षुण्यता, अस्मिता, अस्तित्व को प्रकट करती है। औषधी के रूप में अलसी में विद्यमान हैं। यह वात, पित्त, कफ, रोगों की नाशक औषधि है। तीन विकृतियों से दूर करने वाली स्कंदमाता को परिपक्व स्वरूप में दर्शाया जाता है।

कात्यायनी- देवी कात्यायनी ऋषि कात्यायन की पुत्री होकर आध्यात्म के साथ शक्ति का परिचय प्रस्तुत करती है और महिषासुर जैसे अधर्म का नाश करती है। यहाँ यह प्रदर्शित होता है कि आध्यात्म जहाँ दूसरो से करूणा, दया, सद्भाव, विनम्रता रखने के लिए ही प्रेरित नहीं करता वरन आवश्यकता पड़ने पर शोर्य भी सिखाता है। देवी कात्यायनी को आयुर्वेद में कई नामों से जाना जाता है जैसे अम्बा, अम्बालिका, अम्बिका। इसके अलावा इसे मोइया अर्थात माचिका भी कहते हैं। यह कफ, पित्त, अधिक विकार एवं कंठ के रोग का नाश करती है।

कालरात्रि- देवी कालरात्रि या माँ काली का होता जो चण्डी के रूप में होती हैं। जब-जब सीमाएँ लांघी जाती है तब-तब देवी कालरात्रि का अवतरण होता है। जब भी पानी उफान पर होता है तो अपने तटबंध तोड़ देता है और बाढ़ में बदल जाता है, ऐसे ही अन्याय अपनी सीमा से बाहर होता है तो जो मां करूणा, दया, सद्भाव से भरी थी उसे चण्डी बनने में भी देर नहीं लगती है। समाज में ऐसे कई उदाहरण है। जब तक हम अपने अहंकार को अलग नहीं रखते शिव जैसा एकात्म नहीं ला सकते। वैसे शिव बनकर ही देवी के इस रूप को शांत किया जा सकता है। कालरात्रि जिन्हें महायोगिनी, महायोगेश्वरी कहा गया है। यह नागदौन औषधि के रूप में जानी जाती है। सभी प्रकार के रोगों की नाशक सर्वत्र विजय दिलाने वाली मन एवं मस्तिष्क के समस्त विकारों को दूर करने वाली औषधि है। इस पौधे को व्यक्ति अपने घर में लगाने पर घर के सारे कष्ट दूर हो जाते हैं। यह सुख देने वाली एवं सभी विषों का नाश करने वाली औषधि है।

महागौरी- देवी महागौरी वह स्वरूप है जहाँ सरलता, सहजता, समर्पण है। जब देवी तमाम दुर्भावनाओं और कालिमा जैसे क्रोध, हिंसा जैसी शक्तियों का सामना कर के उस से आगे निकल जाती है, तब महागौरी का उद्भव होता है। महागौरी वानप्रस्थ के बाद को चित्रित करती है जहाँ अनुभव से प्राप्त दृढ़ता और अनुशासन के साथ आत्मज्ञान की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त होता दिखाई देता है। यह स्थिति गांभीर्य के साथ बालसुलभ भोलेपन को भी दर्शाता है। महागौरी जिसे प्रत्येक व्यक्ति औषधि के रूप में जानता है क्योंकि इसका औषधि नाम तुलसी है जो प्रत्येक घर में लगाई जाती है। तुलसी सात प्रकार की होती है. सफेद तुलसी, काली तुलसी, मरुता, दवना, कुढेरक, अर्जक और षटपत्र। ये सभी प्रकार की तुलसी रक्त को साफ करती है एवं हृदय रोग का नाश करती है।

सिद्धिदात्री- देवी सिद्धिदात्री सौम्य रूप धारण कर लेती है तब उसके लिए सिद्धि के मार्ग खुल जाते हैं और वह माँ सिद्धिदात्री बन के परम निर्वाण का आशीर्वाद देने वाली माँ हो जाती है। यह सन्यास आश्रम को अभिव्यक्त करता है। इनसे तृप्ति, वैराग्य, आत्मज्ञान, विरक्ति, फलीभूत होते हैं और आशीर्वाद के साथ तमाम सिद्धी के मार्ग खुल जाते हैं। सिद्धिदात्री जिन्हें नारायणी या शतावरी कहते हैं। शतावरी बुद्धि बल एवं वीर्य के लिए उत्तम औषधि है। यह रक्त विकार एवं वात पित्त शोध नाशक और हृदय को बल देने वाली महाऔषधि है।

प्रकृति और औषधी के विभिन्न रूपों को देवी का ही स्वरूप देने के पीछे वात्सल्य भाव है जो देवी में ही सर्वाधिक परिलक्षित होता है। इस तरह से देवी के रूपों को पहचानने और उनकी आराधना करने के पीछे कारणों के हेतु न केवल वैज्ञानिक हैं वरन् मानव जाति को सुरक्षित, भयमुक्त, स्वस्थ्य, निर्विकार रखना भी रहा है।

डॉ. लोकेन्द्रसिंह कोट